Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Basic Introduction of Buddhist Philosophy.

(बौद्ध दर्शन सामान्य परिचय)

बौद्ध दर्शन के संस्थापक महात्मा बुद्ध थे। ई० पू० छठी शताब्दी में ब्राह्मणों के वर्चस्व एवं समाज की जटिल व्यवस्था के विरुद्ध दो धार्मिक तथा वैचारिक क्रान्तियाँ हुई। इनमें से एक का नेतृत्व महावीर स्वामी ने किया। दूसरी क्रान्ति का नेतृत्व गौतम बुद्ध ने किया जिनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इसका परिणाम उस समय के धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था में सुधार के रूप में दृष्टिगत हुआ।

गौतम बुद्ध का जन्म हिमालय की तराई स्थित कपिलवस्तु नामक स्थान में शाक्य क्षत्रिय राजवंश में हुआ था। वे बचपन से ही वैरागी प्रवृति के थे। इसी को दृष्टिगत रखते हुए पिता ने इनके लिए नाना प्रकार के आमोद-प्रमोद के साधन का प्रबंध किया। परन्तु इन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में मानवजाति को दुःखों से पीड़ित देखकर अपने विशाल राजमहल, राजसी वैभव, माता-पिता, पत्नि यशोधरा एवं नवजात पुत्र राहुल को परित्याग कर वन की ओर प्रस्थान किया। बौद्ध दर्शन में इनके गृहत्याग की घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। इनके त्याग, उच्च आदर्श, आदर्शपूर्ण जीवन एवं मानवमात्र के प्रति प्रेम के सन्दर्भ में इनका पहले के एवं बाद के सभी विचारकों में विशिष्ट स्थान है।

Scanned with CamScanner

गौतम बुद्ध बचपन से ही शांत एवं वैरागी प्रवृत्ति के थे। वे पुत्र के दुःख को देखकर काफी भावुक हो जाते थे। उनकी इस प्रवृत्ति का बल कपिलवस्तु में घटित चार घटनाओं से है। वे ये है- एक वृद्ध व्यक्ति को प्रत्यक्ष देखना, बिमार व्यक्ति को तड़पते हुए देखना, श्मशान की ओर जाते हुए एक शव अर्थी के पीछे रोते बिलखते हुए परिजनों को देखना, और एक भिक्षु साधु को देखना। इन घटनाओं ने उनके भावुक मन में संसार के दुःखमय स्वरूप की स्पष्ट छाप छोड़ दिया। इससे आहत होकर सत्य के साक्षात्कार एवं सांसारिक दुःखों से मानव मात्र के कल्याण हेतु सभी सुख वैभव को त्याग कर वन में जा कर सन्यास ग्रहण कर लिया।

वन गमन के पश्चात इस समय के लोकप्रिय आचार्यों अराड़ कलाम, एवं उद्दक रामपुत्र से ज्ञान प्राप्त किया। इनकी शिक्षाओं से सन्तुष्ट नहीं हुए। इसके पश्चात वे उरुवेला में निरंजना नदी के तट पर घोर तपस्या किये। वे यहाँ भी अपनी लक्ष्य प्राप्त नहीं किये। इसके बाद वे बोद्ध गया चले गये वहाँ पिपल वृक्ष के नीचे फल्गु नदी के किनारे घोर तपस्या कर तत्वज्ञान प्राप्त किये। जीवन के सत्य से परिचित हुए। इसी दिन से वे गौतम बुद्ध कहलाने लगें।

सत्य के साक्षात्कार के पश्चात वे मानव के कल्याण हेतु उपदेश देना शुरू किया। वे पहला उपदेश सर्वप्रथम बोधि प्राप्ति के पश्चात ऋषिपतनम (सारनाथ) में अपने पाँच साथियों को दिया। बौद्ध दर्शन में इस

घटना को धर्मचक्रप्रवर्तन कहा जाता है। यहीं से बौद्ध धर्म का प्रारम्भ हुआ। कालांतर में उनके द्वारा प्रकाशित धर्म विश्व धर्म का रूप ले लिया। वर्तमान में विश्व के चार-पांच देश मे बौद्ध धर्म के अनुयायी है। वे 40 वर्षों तक संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाकर 80 वर्ष की अवस्था मे कुशीनगर में मल्लों के राजप्रासाद में महापरिनिर्वाण प्राप्त किये।

गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ व्यवहारिक है। उनके उपदेश का एकमात्र उद्देश्य मानव मात्र को दुःखो से मुक्ति दिलाना था। वे केवल संसार के दुःखमय स्वरूप एवं दुःख निवृत्ति के उपाय पर बल दिया। वे तत्वमीमांसीय प्रश्नों का उत्तर नहीं देते थे इसे अव्याकृत कहते थे। इसलिए इन्हें अज्ञेयवादी भी कहा जाता है। वे वेदों के प्रमाण्य को अस्वीकार करते थे, ईश्वर की सत्ता का भी निषेध करते थे। नित्य आत्मा का भी खंडन किया तथा सत्ता के संबंध में परिवर्तनशील सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। वे वैदिक विचारधारा मे निहित कर्मवाद एवं पुनर्जन्म को अपनाये। इसके आधार पर ही वह अपने दर्शन को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया।

गौतम बुद्ध ने अपने जीवन काल मे कोई पुस्तक नहीं लिखे है। उनके विचारों की जानकारी उनके मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों द्वारा संकलित महान ग्रन्थों से मिलती है। बौद्ध धर्म एवं दर्शन की प्रारम्भिक जानकारी तीन पुस्तकों से मिलती है। इन्हें त्रिपिटक कहते हैं। शाब्दिक अर्थ है- नैतिक नियमों की तीन पिटारियाँ। ये हैं- सुत्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक। ये पाली भाषा में लिखे गये है।

Scanned with CamScanner

सुत्त पिटक बुद्ध के उपदेशों का मूल संग्रह है। विनय पिटक में संघ के आचार-विचार नियमों का संग्रह है। अभिधम्म पिटक में बुद्ध के उपदेशों पर आधारित दार्शनिक नियमों का संग्रह है। 'मिलिन्दपञ्हो' बौद्ध धर्म का प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें बौद्ध गुरु नागसेन और यूनानी राजा मिलिन्द के संवाद का वर्णन है।